सनातन धर्म युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत– एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

जूली त्यागी*, ड़ॉ0 गीता राणा**

**शोध छात्रा, **अध्यक्षा एवं एसो0 प्रोफे0, कला विभाग,*

दिगम्बर जैन महाविद्यालय बडौत (बागपत)

E-mail: jully.tyagi88@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

जूली त्यागी,
ड़ॉ0 गीता राणा,

सनातन धर्म युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत– एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Artistic Narration
Dec. 2019, Vol. X No. 2,
pp.143-149

https://anubooks.com/?page_id=6393

सारांश

धर्म आस्था की अनुकृति है। जहाँ धर्म है वही कला का निवास है, परन्तु आधुनिक जीवन शैली, धर्म से विमुख करती है और धर्म के बदलते प्रभाव को देखते हुए आधुनिक संसार में धर्म के प्रति उदासीनता का प्रभाव भी अधिक प्रबल होता जा रहा है। आधुनिक संसार प्रगति की ओर न जाकर कलुशता की ओर तत्पर है। प्राचीन समय में धर्म के बिना मानस अपने जीवन की कल्पना भी नही कर सकता था। उस समय ध र्म के ऊपर मनुष्य का जीवन आधारित था, किन्तु आज जीवन का आधार विज्ञान है। धर्म मानस को सुखी जीवन जीने का मार्ग सिखाता था ओर आज विज्ञान भी यही प्रत्यन कर रहा है, लक्ष्य केवल मात्र एक है, किन्तु मार्ग भिन्न–भिन्न है। धर्म को मानव जीवन में प्रतिष्ठित करने के लिए आदिकाल से ही मानव द्वारा विभिन्न कलाओं का सहारा लिया गया, फलस्वरुप, कला ने धर्म को लक्ष्य बनाकर ही अपने मार्ग को आगे प्रशस्त किया। प्राचीन काल में धर्म कला मे विद्यमान था और जिसका एकमात्र लक्ष्य ध र्म प्राप्ति था। जिसके परिणामस्वरुप कला ने अभूतपूर्व सफलता अर्जित की। परन्तु आज कला अपने चरम शीर्ष पर हैं और धर्म का स्थान लुप्त होता जा रहा है।

प्रस्तावना

कला और धर्म का सम्बन्ध पुरातन काल से चलता आ रहा है। सनातन धर्म विश्व के महान बडे धर्मो में सबसे प्राचीन धर्म है। यह विष्व का चौथा सबसे बडा धर्म है। परन्तु अधिकतर इसके उपासक नेपाल और भारत में ही मौजूद है। हिन्दी में इस धर्म को वैदिक धर्म भी कहा जाता है। कुछ विद्वान वैदिक धर्म को भारत की विभिन्न संस्कृतियों एवं प्राचीन परम्पराओं का मिला जुला रुप मानते है, जिसका कोई भी संस्थापक ज्ञात नही है। हिन्दू धर्म इकलौता ऐसा धर्म है जिसमें विभिन्न देवी–देवताओं की उपासना की जाती है। यह धर्म अपने भीतर कई भिन्न–भिन्न प्रकार की उपासना–पद्वतियों, मत, सम्प्रदायों और दर्षन को लपेटे हुए है। हिन्दू केवल एक धर्म या सम्प्रदाय ही नही है, आपितु जीवन को सार्थक जीने की एक पद्वति है।

ऊँ शब्द सनातन धर्म का प्रतीक चिन्ह ही नही, अपितु सनातन धर्म का सबसे पवित्र शब्द है। **सनातन का अर्थ है–शाश्वत या ''हमेंशा बना रहने वाला'' अर्थात जिसका न आदि है न अन्त।1** यही सनातन धर्म का सत्य है। यह धर्म मूलतः भारतीय धर्म है , जो कभी पहले पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में व्याप्त रहा है। हिन्दुओ की यह शान सनातन धर्म के रुप में सभी धर्मो का मूल आधार है। सनातन धर्म अर्थात हिन्दू धर्म कुछ भी कहें आज समाज में उसकी वर्तमान स्थिति क्या है? इसके बारे में क्या अवधारणाएँ है? क्या आज हिन्दू धर्म एक ऐसी स्थिति से जूझ रहा है, जो हिन्दुओं के लिए एक चिन्ता का विषय है।

हिन्दू धर्म को इसलिए सनातन धर्म कहा गया है क्योकि यह एकमात्र धर्म है जो ईश्वर, आत्मा, और मोक्ष को तत्व व ध्यान से जानने का मार्ग बताता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष यहीं चार मार्ग जीवन प्राप्ति का मुख्य साधन है। इस धर्म के मूल तत्व सत्य, अहिंसा, दया, दान, क्षमा, जप, तप, व्रत, यम–नियम है। जिनको वेदों के सिद्वान्तों में प्रतिपादित कर दिया गया था।

।। ऊँ।। असतो मा सदगमय, तमसो मा ज्योर्तिगमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय।।

–वृहदारण्य उपनिषद।

अर्थात हे ईश्वर! मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो। मृत्यु से अमृत की ओर ले चलो।

''असतो मा सदगमय'' वाक्य ऋग्वेद से लिया गया है।

हिन्दुस्तान हिन्दू धर्म का केन्द्र स्थल रहा है। यह एकमात्र ऐसा देश है जो अपने अस्तित्व के होने का प्रमाण आज भी प्रमाणित कराता है। महर्षि वाल्मीकी द्वारा रचित रामायण के इतिहास को याद किया जाये तो यह साढे नौ लाख साल पहले की घटना है। महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित महाभारत का इतिहास भी कलयुग के आरम्भ से पूर्व एवं आज से लगभग 5500 वर्श पूर्व का पाया गया है। महर्षि वाल्मीकी को ब्रहमा जी की कृपा के फलस्वरुप रामायण जैसे रसरुपी महाकाव्य को रचित करने का अवसर प्राप्त हुआ। उनका सम्पूर्ण चित्त काव्य रस से भर उठा और करुणा की पुकार हृदय को विदीर्ण करने लगी। अतः यही धार्मिक घटनाएँ भारत को अन्य देशों से अलग पहचान दिलाती है।

हिन्दू धर्म आज क्यों सकट में है, इसको हम इस बात से समझ सकते है कि अगर हम बात करें भगवान की पूजा–अर्चना विधि की तो उसका कोई सर्वश्रेष्ठ विकल्प नहीं है। **वास्तव में वर्तमान**

स्थिति में हिन्दू पूरी तरह से भ्रमित हो चुका है एवं स्वंय ही अपने सनातन धर्म एवंम वेदों द्वारा वर्णित हिन्दू धर्म की धज्जियां उड़ा रहा है।2 अतः आज के वर्तमान दौर में सभी हिन्दू समाज का एकमत होना परम आावश्यक है। असली हिन्दू धर्म वह था, जो वेदों के द्वारा ज्ञान की देवी माँ सरस्वती को प्रसन्नचित कर लेता था। अधिकतर हिन्दुओं के पास अपने ही धर्मग्रन्थ को पढ़ने के लिए समय नही है। वेद पुराण और उपनिषद पढना तो दूर वे गीता तक को नही पढ़ते है। गीता हिन्दू धर्म का सबसे उत्तम धर्मग्रन्थ है। महाभारत के 18 अध्याय में से एक भीश्म पर्व का हिस्सा है गीता। गीता में कुल 18 अध्याय है। इनमें कुल श्लोक संख्या 700 है। गीता को बार–बार पढ़ने के बाद वह समझ में आने लगती है। गीता एक ऐसा ग्रन्थ है, जिसमें भक्ति ज्ञान और कर्म योग की चर्चा की गयी है। गीता के प्रत्येक शब्द पर अलग से ग्रन्थ लिखा जा सकता है। प्रत्येक शब्द के अन्दर इतना ज्ञान समाहित है कि हर बार नए–नए शब्दों का रहस्य खोलता जाता है।

गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोड़कर नए वस्त्रो को धारण करता है। ठीक वैसे ही आत्मा (शरीरी) एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रवेश करती है।3 आत्मा का सम्बन्ध परमात्मा से जुड़ा होता है और परमात्मा को वही पा सकता है, जिसके भीतर आस्था रुपी विश्वास की चेतना हो। धर्म की भावना मुख्यत मनुष्य को त्याग करने वाला बना देती है। उसे स्वच्छता और स्वतंत्रता चाहिए, जिससे वह अपनी दुनियादारी से मुक्त रह सके। धर्म हमारे जीवन में रचा–बसा ऐसा भाव है जो जीवन के अनेकों रुपों को प्रकट करता है। देवी–देवताओं की बहुलता और अनेक रुपता मानव जीवन की विविधता और बहुरुपता के साथ समन्वित है। हम अपने भौतिक जीवन में अनेक परिस्थितियों के बीच धर्म की पहचान करते है। धर्म और ईश्वर हमारे साथ किसी विचार और तर्क से परे हर कर्म में साथ देते है।

सनातन धर्म पृथ्वी के सबसे प्राचीन धर्मो में से एक है, हालांकि इसके इतिहास के बारे में विद्वानों में मतभेद है। इस धर्म का इतिहास कई हजार वर्ष प्राचीन माना जाता है। जहाँ भारत की सैन्धव सभ्यता में हिन्दू धर्म के अनेक चिन्ह मिलते है। इनमें मातृदेवी की मृणमूर्ति, भगवान शिव पशुपति जैसे देवताओं की मुद्राए, पीपल वृक्ष, **अनेकानेक पशुओं की लघु मूर्तिया जिनमें वृषभ प्रसिद्व है।4 मातृदेवी की मूर्ति का निर्माणकार्य धार्मिक पूजा के लिए किया जाता था।5** भारत में सांचे के काम के सबसे

प्राचीन उदाहरण हड़प्पा में पायी गयी मनुष्य व पशु मूर्तिया है। यहाँ पुरुष आकृतियों की अपेक्षा नारी आकृतियों का निर्माण कार्य अधिक हुआ। यहाँ के मिट्टी के खिलौने भी विशेष प्रसिद्व है। इतिहासकारों के अनुसार सिन्धु घाटी सभ्यता के लोग स्वंय आर्य थे, उनका मूल स्थान भारत ही था। इस अनौखी सभ्यता को ''वैदिक सभ्यता'' के नाम से भी जाना जाता है। लगभग 1700 ईसा पूर्व में आर्य अफगानिस्तान, कश्मीर, पंजाब और हरियाणा के निवासी बन गए। तब से आर्य अपने देवी–देवताओं को प्रसन्न करने के लिए वैदिक संस्कृत में मन्त्र उच्चारण करने लगे। कुछ विद्वान ऋषियों ने चारों वेदों की रचना के बाद उपनिषद्, पुराण जैसे ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त किया। जिसके फलस्वरुप वैदिक धर्म में काफी परिवर्तन आया, इस तरह आधुनिक हिन्दू धर्म का उदय हुआ।

कुकुदयुक्त बैल की मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मोहर

मोहर पर पशुपति की आकृति

सिन्धु घाटी से मिले ताम्र–लेखों पत्थर की मूर्तियों, मोहरों तथा मिट्टी की मूर्तियों के अध्ययन से सिन्धु घाटी के लोगो के धर्म के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त हुई है।6 इन लोगो का धार्मिक जीवन में विश्वास था। इनके धार्मिक विचार इह लोक व परलोक दोनो उद्देश्यों से प्रेरित थे। आर्य लोग सन्तान की प्राप्ति, सुख–समृद्वि की प्राप्ति आदि के लिए पूजा–अर्चना करते थे। मोहरों पर पेड़–पौधो की आकृतियाँ उत्कीर्ण की गयी है। प्रकृति की मातृ देवी के रुप में उपासना करते थे। मुहरों पर बनाए कुछ जानवर के चित्र विशेष प्रसिद्व है। जैसे एक सींग वाला जानवर, जिसे एकश्रृंगी के नाम से जाना जाता है। कुछ मिट्टी की मोहरों तथा बर्तनो पर पीपल, बबूल, नीम आदि वृक्षों के आकृति–चित्र मिलते हैं। पीपल वृक्ष को देवता के रुप में पूजा जाता था। यहाँ पर सूर्य पूजा के उदाहरण भी प्राप्त हुए है। स्वास्तिक चिन्ह हड़प्पा सभ्यता की ही देन है। हड़प्पा सभ्यता के लोग टोना–टोटका, भूत–प्रेत व पुनर्जन्म जैसे अन्धविश्वासो पर विश्वास किया करते थे। मातृदेवी और देवताओं को बलि भी प्रदान की जाती थी।

भारत एक धर्मप्रधान देश है। यहाँ आस्था प्रकट करने के अनेको अवसर आते है। आमतौर पर, धर्म किसी आस्था के सहारे मन का सुकून, सन्तोष और मानसिक शान्ति प्राप्त करने का एक साधन है। लेकिन मानसिक शान्ति को प्राप्त करने के लिए धर्मनिरपेक्ष मार्ग पर चलना परम आवश्यक है। प्राचीन काल में निराशाजनक परिस्थितियों मे लोग ऐसी समस्या सामने आने पर जो उनके काबू से बहार है अथवा निराशा है– आशा और सुकून प्राप्त करने के लिए किसी धार्मिक आस्था का सहारा लेते थे। ऐसी

स्थिति में धार्मिक आस्था के रुप में उन्हे आषा की किरण दिखाई पड़ती थी। उदाहारणस्वरुप– दैनिक जीवन में जो वस्तु उन्हे मानसिक शान्ति प्रदान करती थी, उसे वो पूजा के रुप में स्वीकार करते थें। जैसे– प्रकाश का स्रोत्र सूर्य है, जो उनको प्रकाश के रुप में अन्धकार से निजात दिलाता था। भारत के आदिवासी किस धर्म से सम्बन्ध रखते थे, इस विषय में कई प्रकार के भ्रम पैदा किए जाते है। परन्तु कुछ विद्वानों का मानना है कि भारत के आदिवासियों का मूल धर्म शैव था। वह भगवान शिव की मूर्ति की पूजा नही, बल्कि शिवलिंग की पूजा करते थे। भारत की प्राचीन सभ्यता में शिव और शिवलिंग से जुड़े जो अवशेष प्राप्त होते है। भगवान शिव को आदिनाथ, आदिदेव और आदियोगी भी कहा जाता है। आदि का अर्थ सबसे पुरातन, प्रारम्भिक, प्रथम और आदिम।

कला और धर्म दोनो का मानव जीवन में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मानव जीवन के सभी कार्य धर्म व कला से सम्बद्व रहे है। कलाएँ हमेशा धर्म की संगिनी, सहायह और प्रतिपादक बनकर रही है। मध्यकाल (सोलहवीं शताब्दीं) तक धर्म के अन्तर्गत ही कलाओं का प्रमुख स्थान था। धार्मिक क्रियाकलाओं को अधिक रोचक, प्रभावी तथा आकर्षक बनाने के लिए कलाओं को सबसे अधिक महत्व प्रदान किया जाता था। समाज का सम्पूर्ण आध्यात्मिक और भावनात्मक जीवन धर्म के आधार पर आश्रित है, जहाँ कला के उपयोगी पक्ष की सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति के दर्शन होते है। सौन्दर्य आत्मा–शक्ति का समस्त स्रोत धर्म में निहित है साथ ही यह स्पष्ट होता है कि समाज के अनेकानेक महत्वपूर्ण पक्षों में से एक पक्ष धर्म का भी है। क्योकि कला धर्म और समाज को एक साथ मिलाकर चलने में सफल होती है। भारत, चीन, जापान, यूनान, म्रिस आदि देशो में शुरु से ही धर्म को कला के साथ संयोजित किया जाता था। चित्रकारो तथा मूर्तिकारो ने अनेको देवी–देवताओं को धार्मिक कलाकृतियों में रुपान्तरित किया है। इस प्रकार परमात्मा की उपासना के साथ ही कलाओं को धार्मिक जगत में महत्वपूर्ण एवं सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त हुआ। कलाकार प्रारम्भ से ही धार्मिक शास्त्रों तथा पुराणों के नियमो के आधार पर ही कला अभ्यास किया करते थे। अतः भारत की प्राचीन कला धार्मिक भावनाओं का मिला–जुला रुप है। विभिन्न धार्मिक अवसरों, उत्सव और संस्कारों के लिए कला ने धर्म को ईश्वरीय रुप प्रदान किया जैसे–लोक चित्रण में। उस समय कलाकार पहले धार्मिक होता था, फिर कलाकार। कला धर्म के साथ बँधी हुई थी। तब चित्रकला का कार्य धार्मिक भावनाओं का यथार्थ चित्रण करना था। चित्रकार राजा रवि वर्मा इस युग के प्रथम प्रवर्तक थे, जिन्होने अनेक धार्मिक और पौराणिक कथाओं का सफलतापूर्वक चित्रण किया था। किन्तु आज कलाकार अपने स्वतंत्र मन से चित्रण करता है। धर्म से बँधा हुआ नही है, स्वतंत्र है। लेकिन ऐसा नही है कि कोई भी चित्रकार धार्मिक चित्रण नही कर रहा है। अन्तर केवल यह है कि अपने विषय का चुनाव चित्रकार स्वतंत्र मन के अनुसार कर रहा है।

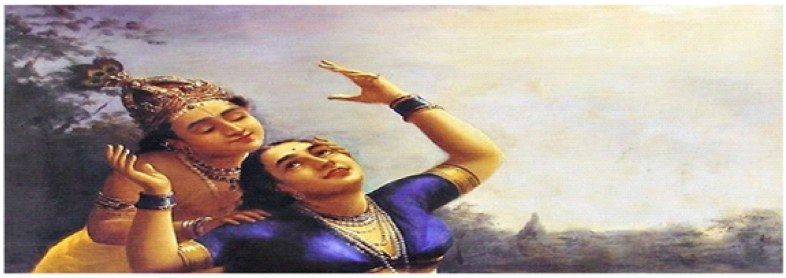

राजा रवि वर्मा की एक चर्चित पेटिंग 'राधा-माधव'

यह कहना गलत न होगा कि सनातन हिन्दुत्व की मान्यताओं को गीता प्रेस ने घर–घर तक पहुँचाया और हिन्दुत्व पुनरुत्थानवादियों के मिशन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।7 आज के युग में जब हिन्दी, हिन्दू और हिन्दुस्तान की बात की जाती है, या घर वापसी पर बहस होती है या गोमांस के प्रतिबन्ध की मांग गर्म होती है तो इसको सीधे गीता प्रेस, कल्याण से उनके स्थापना दिवस से जोड़कर देखा जा सकता है। पत्रकार अक्षय मुकुल ने अपनी पुस्तक ''गीता प्रेस एंड़ द मेकिंग ऑफ हिंन्दु इण्ड़िया'' में गीता–प्रेस के आक्रामक हिन्दुत्व पर सविस्तार वर्णन किया है। इसका सबसे बड़ा योगदान है कि हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों को आम जनता तक सस्ते दामों मे पहुँचाना। इस प्रेस ने 1920 के दशक से ही भारत में रहने वाले हिन्दू बल्कि विदेशों में रहने वाले हिन्दुओं को भी जोड़ने का कार्य किया।

हिन्दू धर्मग्रन्थों के अलावा 'कल्याण' ने सनातन हिन्दू धर्म के मूल बिन्दुओं और उसकी पुरानी विचारधारा को आम लोगो तक पहुँचाया। हालांकि गीता प्रेस ने वेदों को छापने से स्वंय को दूर रखा। कल्याण के सम्पादक राधेयाम खेमका जी कहते है कि उनके सभी प्रकाशन ''मनुष्य जीवन के लक्ष्यो और कल्याण की चर्चा करते है, हम अध्यात्मिक उन्नति के लिए दृढ़ संकल्प है, किसी आक्रमण के लिए नही।'' हिन्दू धर्मग्रन्थों का प्रकाशन करने वाली गीता प्रेस की पुस्तके कलयुग में पाश्चात्य प्रभाव को कम करने में कारगर है। राष्ट्रकवि ''रामधारी सिंह दिनकर'' जी ने अपनी एक पुस्तक में लिखा है कि जितना हिन्दू धर्म का क्षय होगा उतना ही यह धर्म प्रगाढ़ रुप लेता जाएगा। धार्मिक पुस्तको के द्वारा आचरण, नैतिक मूल्य और अनुशासन सब मिलकर हमारे व्यक्तित्व में निखार लाते है। धार्मिक पुस्तकों को प्रकाशित करने वाली देश की सबसे बड़ी संस्था गीता प्रेस के बन्द होने के साथ–साथ इसे दोबारा शुरु करने के लिए सोशल साइट्स पर चन्दा दिए जाने की अपील वाले सन्देशो को बहुत लोगो के पास भेजा गया। लेकिन ऐसे सन्देश के पीछे गीता प्रेस को बदनाम करने की साजिश की गयी थी। कल्याण पत्रिका के संपादक राधेश्याम खेमका जी ने दान करने की अपील को खारिज किया है। उन्होने कहा की गीता प्रेस का इस प्रकरण से कोई सम्बन्ध नही है। गीता प्रेस का उद्देश्य केवल धर्म प्रचार के लिए जनता में बिना शुल्क के साहित्य का वितरण करना है।

कोरोना वायरस की मौजूदा स्थिति से ईश्वर की सत्ता मजबूत होकर उभर सकती है, क्योकि विज्ञान किसी भी प्रकोप की जानकारी देने में नाकाम साबित हुआ है। ईश्वर का पाप और कर्मफल का

सिद्वान्त ही कोरोना की धार्मिक व्याख्या करता है। इन सबसे परे व्यक्ति के जीवन में ईश्वर की एक अहम भूमिका है। उसकी उपयोगिता है धर्म।

हैं सत्य सनातन धर्म मेरा, तेरा कोई धर्म न जाति है।
कैसे टिकेगा बता तू वहाँ, जहाँ पूजी जाती माटी है।
एक सूत्र में है हम बंधे, है तत्पर तेरे संहार को।
बहुत कर चुका उत्पाद तू, जा छोड़ अब संसार को।।

कलयुग अपना प्रभाव सार्वजनिक रुप से दिखा रहा है। दम्भी और झूठे लोग अपना स्वार्थ सिद्व करने के लिए धर्म को ताक पर रखे हुए है। धार्मिक क्षेत्र में जहाँ अधिकांश बाते विश्वास से सम्बन्ध रखने वाली होती थी, वहाँ आज धर्मध्वजी लोग धर्म का चोला ओढ़कर भोली–भाली जनता को अपना शिकार बना रहे है। तीर्थो, देवालयों, धर्मस्थानो में आये दिन इस प्रकार की घटना संज्ञान में आती रहती है। इसी कारण आज धर्म और ईश्वर के प्रति लोगो की आस्था कम होती जा रही है। धर्म के प्रति नास्तिकता और उदासीनता के लिए ऐसे लोग जिम्मेदार है। ऐसे लोग अपने का आस्तिक व धर्म प्रेमी कहकर अपने आाचरणों द्वारा समाज पर कुठाराघात करते है। अतः हमे नही भूलना चाहिए कि हिन्दू धर्म के बिना भारत का कोई भविष्य नही है। हिन्दू धर्म वह भूमि है जिसमें भारत की जड़े गहरी जमी हुई है और इस भूमि से इसे उखाड़ा गया तो भारत वैसे ही सूख जायेगा जैसे कोई वृक्ष भूमि से उखाड़ने पर सूख जाता है। हमारी सभ्यता और संस्कृति पहले से ही आध्यात्मिक रही है। ईश्वर की आराधना हमारा जन्मसिद्व अधिकार है। आधुनिक युग में जिस प्रकार समाज धर्म से विमुख होता जा रहा है। यह भी विचारणीय है। सामाजिक व आध्यात्मिक होने के साथ ही साथ सचेत होने की आवश्यकता है। सिर्फ गीता प्रेस ही एकमात्र ऐसा साधन है जिसके सहयोग से समाज अपनी धर्म संस्कृति को अपना सकता है। **हम लोगो को यह विचार करना चाहिए कि निष्काम भाव से भगवान मिलते है निष्कामी के लिए तो कहना ही क्या है? जब प्रेम की मात्रा अधिक हो तो सकाम भाव से भी भगवान मिल जाते है ।8**

सन्दर्भ ग्रंथ

1- http:// hi.m.wikipedia.org 16 March 2020.
2- www.studybuddhism.com by Berzin archives Dec. 2007.
3. रासुखदास स्वामी–''गीता–प्रबोधिनी''– गीता प्रेस, गोरखपुर, गोविन्द भवन–कोलकाता सं0 2064 आठवाँ पुनर्मुद्रण पेज सं0 **28**
4. किरन चमन–भारतीय मूर्तिकला का इतिहास (अलंकार भाग 29) राजहंस प्रकाशन मन्दिर, मेरठ, तृतीय संस्करण 1993, पृष्ठ सं0 **16**
5. श्रोत्रिय ड़ॉ0 शुकदेव –भारतीय कला –गौरव' (प्रारम्भिक काल से मध्यकाल तक) चित्रायन प्रकाशन मुजफ्फरनगर, 2004 पृष्ठ संख्या– **28**
6- http:// www.india old days.com/ 20Dec; 2017
7- http:// amarujala.com – Sachin yadav 30 August 2015, 7:58 AM
8. गोयन्दका जयदयाल – अपात्र को भी भगवत्प्राप्ति, गीता प्रेस, गोरखपुर, (कोलकाता संस्थान) सं0 2069 ग्यारहवाँ पुनर्मुद्रण पेज सं0 **08**